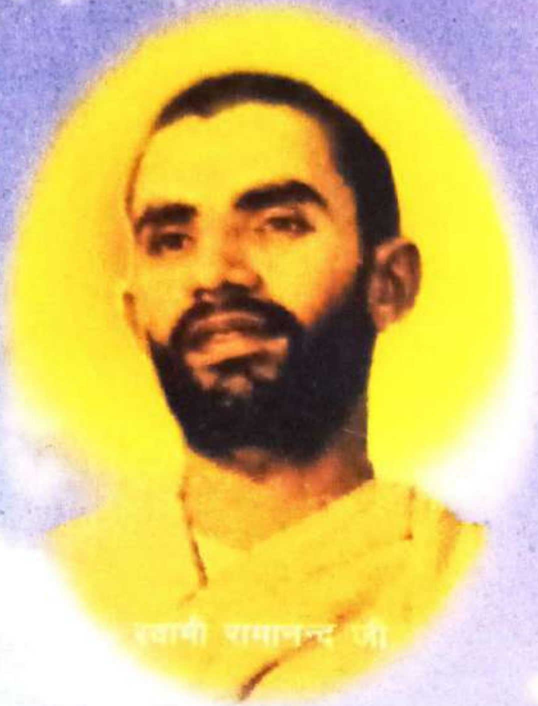
स्वामी रामानन्द जी

पुष्प प्रसाद

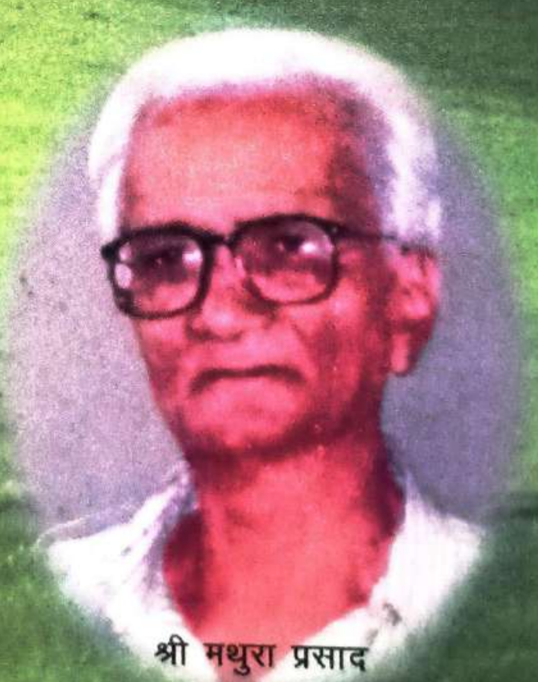
श्री मथुरा प्रसाद

विवरणिका

1. जीवन परिचय
2. भूमिका
3. गुरू वन्दना
4. नमस्कार सप्तक

भजन

1. राम नाम का जप करने को
2. दारून दुख परिताप से उबरउ
3. प्रतिकूल कृपा प्रभु माथे टेको
4. राम–राम श्री राम नमः
5. राम–राम प्रति रोम पुकारे लगी लगन
6. जो बीती सो बीती मूरख
7. राम नाम का सोता फूटे
8. मधुर वचन अति निर्मल जीवन
9. करामात किस कलाकार की
10. न हो यदि मिलन
11. देखो सब में योग सुराम के
12. विलय के बिना ना पल चैन आए
13. हँस चलो उड़ धाम राम के
14. निज कृत जाल में फंस अब रोता
15. कैसा मूरख सठ अज्ञानी
16. भव पार करे सब सुगम सफल दो
17. नर तन लोक किया साकार
18. हाथ खोल जाय शमशान
19. रोम रोम तन करे आरती
20. जैसा हूँ, बस तेरा हूँ गुरु
21. संकल्प तुम्हारा अमर रहेगा
22. किस अन्य को माथ नवाएं हम
23. प्रभु बाँह गहो, प्रभु बाँह गहो
24. मनुष्य जनम का कर कुछ ध्यान
25. धरनि धन धरा धर चला हो के
26. बीती उमर खोजते तब मिला क्षण
27. दुःख द्वन्द्व का भार बिखर जाये
28. प्रभु की ज्योति समाई मुझमें
29. श्रद्धान्जलि
30. हर मुश्किल में राह मिली
31. मोह की तान चादर, यों सोते रहे
32. काहे रे मनवा रहे उदास
33. तेरे इश्क़ में यूँ मिटा दूँ हस्ती
34. दोहे
35. नववर्ष का सन्देश
36. कृपा प्रभू का वाहन बनकर
37. मातु, पिता, हे बन्धु, सखा, गुरु

पूज्य स्व. श्री मथुरा प्रसाद जी (भैय्या जी)

जीवन परिचय : परम अद्वितीय आध्यात्मिक प्रतिभावान, तेजपुंज, प्रेमासागर, सेवा व त्याग की मूर्ति हम सबके पथ प्रदर्शक श्री मथुरा प्रसाद जी (भैय्या जी) ३.१.२००४ पौष मास शुक्ल पक्ष एकादशी को पार्थिव शरीर का त्याग कर ७८ वर्ष की आयु में गुरुधाम वासी हो गये। आपके स्नेहिल स्मरण से हम सबके मन प्राण अनोखी पुलक से भर जाते हैं। यादों के सघन घन बार–बार अन्तर्मन में उमड़ते हैं। आपका जन्म साधारण परिवार में हुआ था माता अत्यन्त धर्मनिष्ठ और पूज्य गुरुदेव की शिष्या थीं। हाईस्कूल पास करने के उपरान्त ही सुन्दर, सुशील, प्रेम व त्याग की मूर्ति 'प्रेमा' से आपका 'पाणिग्रहण संस्कार' हुआ। ३५ रु. माह लिपिक की प्राइवेट नौकरी से आय का खाता खोला। कालान्तर में एम.ए., एल.एल.बी. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि तीव्र लगन तथा उच्चतम प्रतिभा के कारण जीवन में तीव्रगति से उच्च पदों को प्राप्त किया। आपके प्रशासनिक अधिकारी आपके विषय में कहते थे कि आप अपने पद से चार पद उच्च का कार्य भार संभालने की क्षमता रखते हैं। नेशनल टेक्सटाइल्स कारपोरेशन में मैनेजर पर्सनल और फिर डिप्टी लेबर कमिश्नर हुये। अन्त में लेबर कोर्ट का कार्य भार संभाला। कानपुर के साधकों ने पंडित द्वारा बाल्यकाल में बनी आपकी जन्म कुंडली पढ़ी, जिसमें आपके व्यक्तित्व का इस प्रकार उल्लेख था :–

प्रसन्नचित, सहनशील, कवि, संगीतज्ञ, मृदुभाषी, गुरु तुल्य स्थान, सहज आकर्षण आदि।

उन्हें अपना दुःख राई और दूसरों का पर्वत सदृश्य प्रतीत होता था। उनका दिल सागर के समान गहरा था। उनका दिल सागर के समान गहरा था। हर साधक उनसे दिल की बात खुलकर कह देता था।

उनमें अद्वितीय सेवा भाव था। उदाहरण तो इतने हैं कि उनकी एक पुस्तक बन सकती है। दूसरों में गुणों को खोजने की दृष्टि अति पैनी थी। आपकी कथनी करनी समान थी। सादा जीवन

उच्च विचार आपके व्यक्तित्व की पहचान है।

स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े, जवान सभी के दिल की धड़कन हैं हमारे पूज्य "भैय्या जी"।

हम सबके पथ प्रदर्शक पूज्य श्री रामसरन शुक्ला चाचा जी द्वारा स्थापित पूज्य गुरुदेव के सत्संग रूपी वृक्ष को अपने अथक परिश्रम, लगन व उत्साह से सिंचित, पुष्पित और पल्लवित किया। जिसकी सुगन्ध सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में विस्तरित है।

पुष्प प्रसाद : निरन्तर राम नाम के जप को उन्होंने आपने जीवन में उतारा व दूसरों को ऐसा करने की प्रेरणा के स्रोत बने। अन्तर्मन से काव्य की ज्योति जगी और स्वामी जी द्वारा लिखित अंग्रेजी की पुस्तकों, लेखों, पत्रों का हिन्दी में अनुवाद सरल भाषा में जन साधारण को साधना पत्रिका द्वारा सुलभ कराया। आपके लगभग सभी ३५ भजन और २१ दोहे ईश्वर की सत्ता को परिभाषित करने वाले तो हैं, सागर की गहराई भी अपने में समाहित किये हैं। 'प्रसाद' के रूप में हर साधक उन्हें याद करेगा।

साधना परिवार
कानपुर

भूमिका

हम सर्वप्रथम पू० गुरुदेव के प्रति अति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमको यह अवसर प्रदान किया है इस पुष्प प्रसाद में पू० भैया जी के भजन पू० गुरुदेव भगवान की साधना प्रणाली पर पूर्णतयः आधारित है जिनके भावपूर्ण मनन और अध्ययन के द्वारा हम आध्यात्म विकास की गति को तीव्रतर कर सकते हैं और आनन्द की चरम सीमा को प्राप्त कर सकते है। अन्त में हम साधना परिवार के साधकों का अभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस पुस्तक को हम सबके समक्ष लाने में सहयोग प्रदान किया है।

साधना परिवार

गुरु वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णोः, गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।१।।

अखंड मंडलाकारम् व्यापतम् येन् चराचरम्।
तत्पदम् दर्शतम् येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।२।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।।३।।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षि भूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।४।।

।। श्री राम।।

नमस्कार सप्तक

करते हैं हम वन्दना, नत सिर बारम्बार।
तुझे देव परमात्मन्,मंगल, शिव, शुभकार।।१।।

अंजलि पर मस्तक किए, विनय भक्ति के साथ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ।।२।।

दोनों कर को जोड़कर, मस्तक घुटने टेक।
तुझको हो प्रणाम मम्, शत् शत् कोटि अनेक।।३।।

पाप हरण, मंगल करण, चरण शरण का ध्यान।
धार करुँ प्रणाम मैं, तुझको शक्ति निधान।।४।।

भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर।
श्रद्धा से तुझको नमूँ, मेरे राम हजूर।।५।।

ज्योतिर्मय, जगदीश हे, तेजोमय, अपार।
परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार।।६।।

सत्य, ज्ञान, आनन्दमय, परमधाम श्री राम।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहुत प्रणाम,
पुलकित हो मेरा तुझे, कोटि–कोटि प्रणाम।।७।।

।। श्री राम।।

भजन-1

"राम नाम का जप करने को, दिव्य मंत्र आधार मिला"

गुरुदेव तुम्हारे वचनों में,
जग जीवन जनम का सार मिला।
उल्लास परम सुख आनंद का,
भरपूरि भरा भन्डार मिला।।१।।

ममता मोह में प्राण फंसे थे,
शनैः शनैः अब जीवन बदला।
शान्त हो रही विषय वासना,
नव चेतन का संसार मिला।।२।।

तब कृपा पाय गुरु देव महा,
पावन ज्योति जगी रग रग में,
"राम"–नाम का जाप करने को,
दिव्य मंत्र आधार मिला।।३।।

बढ़ी लगन औ उत्कृष्ट निष्ठा,
"राम–राम" प्रति रोम करे,
तन–मन, बुद्धि परिशोधन का,
एक सबल उपचार मिला।।४।।

प्रीति सघन कर गुरु, चरनन सौ,
विश्वास अटल गुरु वानी पर,
साधन भजन करहुँ तेही विधि,
नतरु, जनम बेकार मिला।।५।।

करहुँ निरीक्षण आतम का,
अवर मनन गहराई से,
जड़ता, पसुता, सठता, त्यागहु,
मनुस जनम दुसवार मिला।।६।।

गुनि–गुनि अवगुन निज तन मन के,
गुनि गन देखें औरन के,
पावन प्रीति बढ़ाय संबहि सो,
दिव्य ज्योति उजियार मिला।।७।।

राम सरन है, जाहु तुरन्तहि,
छाड़ि सकल छिद्र मनन करि,
पार लागिहै जीवन नैया,
राम नाम पतवार मिला।।८।।

मिला पन्थ अति सुगम प्रेम का,
साधन औ पुरसारथ का,
परम गती पा जाने का,
अनुपम अवसर इस बार मिला।।९।।

लेहु "प्रसाद" न चूकउ अवसर,
राम नाम कहुं करउ निरुपन,
गुरु दया सहारे निपट मूढ़ कह,
खुला हरी का द्वार मिला।।१०।।

।। श्री राम।।

(जनवरी–मार्च १९८१–साधना पत्रिका पृष्ठ १७ में प्रकाशित)

भजन-२

''दारुन दुख परिताप से उबरउ, जपि के राम नाम दुख भजन''
राम नाम जपि जनम सुधारो,
सरल, सबल, साधन पुरसारथ, करहु निरुपन जनि हिय हारो।
सुधरे गीध अजामिल गनिका, बाली अरु सुग्रीव विभीषन,
सबरी, ध्रुव, प्रहलाद आदि कवि जपत नाम भय भक्त शिरोमन,
सुदामा, मीरा, कबीरा, तुलसी, सूर सुदास प्रसिद्ध भगत जन,
बयर भव से जपि के सुधरे, पाथ नाम को शुभस्पंदन,
सबल गती बहुतन से तुम्हरी, पायो सतगुरु कृपा अवलम्बन,
दारुन दुख परिताप से उबरउ, जपि के राम नाम दुख भंजन,
जनम–जनम के सुधरे ता छिन, तजि कुसंग भये राम सरन,
गुरु चरनन सो प्रीति परम विश्वास वचन करि पूर्ण, समर्पण
भरि आनन्द सत्संग करहु नित्, छाड़ि कपट करि खूब मनन,
दीपशिखा मन मन्दिर चमके, करत विमल निज तन मन जीवन,
दे ''प्रसाद'' गुरु कीन्ह कृतारथ,
''राम'' नाम अनमोल रतन।

।। श्री राम।।
(साधना पत्रिका अप्रैल–जून १९८१ अंक
प्रथम पृष्ठ में प्रकाशित)

भजन-3

"प्रतिकूल कृपा प्रभु माथे टेको..."

[1]

संकट के जब काले बादल,
तूफानों ने घेरा हो,
मान, प्रतिष्ठा, धरनि, धाम, धन,
लुटा सभी कुछ तेरा हो,
स्वजन, स्नेही, इष्ट मित्र अरु,
पुत्रो ने मुँह फेरा हो,
साया भी निज साथ छोड़ दे,
छाया घोर अन्धेरा हो,

कर कृपा हस्त धर शीश तुम्हारे,
प्रभु ने निज जन मान लिया है,
समता का बहु पाठ पढ़ा कर,
जीवन का उत्थान किया है।

[2]

दुःख, दारिद्र, भय, रोग, निराशा,
नृत्य करे घर सारे में,
सुत–युवा–अकेला नारी पुत्री,
परलोक गये पखवारे में,
ममता मोह करे मन मन्थन,
बरे बयस अंगारे में,
जीवन नैया डग मग डोले,
डूबि रही मझधारे में,

शत पापों का दुष्कर्मो से
खुद ही तो विषपान किया है,
मां करे सफाई गहराई से,
नव जीवन वरदान दिया है।

[3]

ममता में पली, ससुराल चली,
साजे सपने सौ दृग में,
सिन्दूर लुटा, चित्कार मचा, अरु,
कहत अभागिन सब जग में,
सुत कपूत है ठोकर मारे,
गिरे उताने जीवन मग में,
अरि–करनी कर पति विलखावे,
आँवा सुलगे तन मन रग में,

परे बिना कस ठोकर उधरे,
बन्द नयन जो कान किया है,
प्रतिकूल कृपा प्रभु माथे टेको,
ममतावश कल्याण किया है।

[4]

निज विकास के लिए जरुरी
विविध भली अरु बुरी अवस्था,
दे विवेक सब शक्ति बनाई,
कर्म–स्वतन्त्र, फल–भोग, व्यवस्था
पालन करि कर्तव्य कर्म निज,
कृपा प्रभू पर सघन आस्था,
उदय होय सत्संग भजन ते,
ज्योतिर्मय, जो सूर्य अस्त था,

बुझे, उदासे, सूखे मन में,
पुष्पित, मधु मुस्कान किया है,
ले "प्रसाद" जपि राम पुकारो,
सत–गुरु ने शुभ ज्ञान दिया है।

।। श्री राम।।

(साधना पत्रिका अप्रैल–जून १६८१ अंक
४–५ पृष्ठ में प्रकाशित)

भजन-४

"राम – राम श्री राम नमः"

[1]

काम, क्रोध, मद, लोभ की आंधी,
करि, मन, बुद्धि, डावां – डोल,
ममता, मोह, मथे मधु जीवन,
चिन्ता सर्प डसे विष घोल।
मनुस जनम अनमोल विकान्यो,
संतापित है माटी मोल,
त्रिष्णा, सुत वित लोक सताते,
अब मन मन्दिर के पट खोल।
आर्त–भाव जपि नाम पुकारो,
राम राम श्री राम नमः
मौन भाव लय लाय उचारो,
राम राम श्री राम नमः।

[2]

मझधारे में, त्याग साथ सुत,
लुटे तिया का राज सुहाग,
मातु पिता परलोक सिधारे,
बिखरे आशा पुष्प पराग।
मान प्रतिष्ठा परी चोट कस,
सुख वैभव मा लागी आग,
विपदा के नित् खात थपेड़ें,
अब तो रे मन मूरख जाग।
सरन सुखद प्रभु चरण निहारो,
राम राम श्री राम नमः
मनका मनका फेर गुहारो,
राम राम श्री राम नमः।

[3]

प्रगट होय प्रभु परम चेतना,
जड़, वन, पशु, नर योनि हजार,
भाव कुभाव सने मन गहरे,
काम, क्रोध, मद लोभ विकार।
सुख, दुख भोग भजन तपि चमके,
पावन प्रेम, परम उजियार,
सुर दुर्लभ नर योनि मिली अब,
राम सरन गहि करहु पुकार।
लाय लगन जपि खूब विचारो,
राम राम श्री राम नमः
जपत नाम नर योनि सुधारो,
राम राम श्री राम नमः।

[4]

समुझो जनि जग बन्दी खाना,
और अकिंचन रिशते नाते,
ना ही कंचन बुरी कामिनी,
काम क्रोध मद लोभ सिखाते।
समुझ के अपना, जगत–प्रभू–का,
निज माया का जाल बिछाते,
छीजि छूटिहे निज–कृत बन्धन,
करहू कर्म प्रभु प्रेम समाते।
सत चित् आनन्द ज्ञान अगारो,
राम राम श्री राम नमः,
दे "प्रसाद" प्रभु भव निधि तारो,
राम राम श्री राम नमः

।। श्री राम।।
(साधना पत्रिका जुलाई–सितम्बर १६८१
अंक में प्रकाशित)

भजन-५

''राम – राम प्रति रोम पुकारे लगी लगन, गुरु देव कृपा रे''

प्रभु वियोग में तड़पे मन जस,
मीन की हो जल हीन दशा रे,
स्वाती जल जिम चातक चाहे,
दौलत पाय पतंग उजारे,
चंचरीक जिम पकंज भावे,
माखी में मधु प्रेम भरा रे,
जल जिम संगम सागर खोजे
पावक की रवि ओर शिखा रे,
डूबति, सिसके साँस लेने को,
प्यासा जिम जल ठौर निहारे,
कामिह सुखद नारि ज्यों लागे,
अति लोभि जन द्रव्य प्यारे,
आत्म–तत्व तस राम पुकारे,
श्रद्धा प्रेम के फूल खिलारे,
तन–मन, बुद्धि, प्राण पुकारे,
राम – राम रमकार मचा रे,
प्रभू चेतना उतरे तन मन,
हरे काम मद लोभ विकारे,
गहरी निष्ठा अति गहरी हो
प्रेम पयोनिधि स्रोत मिला रे,
रोम रोम मे रम जा माँ रे,
राम राम प्रति रोम पुकारे,
धरि निज शीश मातु गोदी में,
''मैं–तू–पन का मान मिटा रे,
प्रेम पुंज उस दया मई माँ,
पकरि बाह भव पार उतारे,
नाम ''प्रसाद'' से प्रगटे ज्योति,
परम प्रकाश में ज्योति समा रे।।

।। श्री राम।।

(साधना पत्रिका जुलाई–सितम्बर १९८१ अंक पृष्ठ ६ में प्रकाशित)

भजन-६

"जो बीती सो बीती मूरख, सोच समझ अब तो उठ जाग"

[1]

सुर दुर्लभ नर योनि गँवाई,
पसु सम करत विषय अनुराग,
अहँ, लोभ मद काम भवरँ रस,
चूसत जीवन पुष्प पराग,
जरी जवानी, जरा ने घेरा,
झपट रही, लख चिता की आग,
कोमल काया, कीच बनेगी,
हाड़ चोंच लै उड़िहैं काग,
राम नाम के सुमिरन जपि से,
मिटै रोग विष मानस राग,
जो बीती सो बीती मूरख,
सोच समझ अब तो उठ जाग।

[2]

नहीं किया सतकर्म भजन पुनि,
वृक्ष वृद्ध जड़ खड़ा कगार,
बेटा बेटी पत्नी भाई,
मेरे मेरा करे गुहार,
बगँला वाहन शान–ए–अमीरी,
सेवक मेरे द्रव्य अपार,
कफ पित्र वात कण्ठ अब घेरे,
छूटि रहा निज कृत संसार,
सिसकत निरखे सुत सम्पत्ति,
राम सरन नहि तके अभाग,
जो बीती सो बीती मूरख,
टेरत, कहत, राम तनु त्याग।

[3]

धन, भूमि, गज, तुरग नारि सब,
साथ देय घर द्वारे तक,
स्वजन सनेही, इष्ट मित्र सुत,
जाये गंग किनारे तक,
कंचन काया, साथ निभाया,
चिता पे मन्त्र उचारे तक,
कर्म शुभाशुभ जीव संग देय,
भव निधि पार उतारे तक,
जो बीती सो बीती मूरख,
सुमिरि राम मन जान विराग,
हो "प्रसाद" मय जीवन सब का,
ब्रह्म जीव बिच नाता लाग।

भजन-७

"राम नाम का सोता फूटे, राम नाम की झरे फुहार"

करुँ वन्दना बारम्बार,
होय सार्थक जीवन अपना, उर उपजे प्रभु प्रीति अपार।
राम नाम का सोता फूटे, राम राम की झरे फुहार।
सोता सिंह जगे मन वन में, भागे पशुवत विषय विकार।
हृदय कोकिला कूक करे कस, राम राम की करे गुहार।
सरगम निकले रोम–रोम से, 'रा' 'मा' 'रा' 'मा' बजे मल्हार।
राम रुप कण कण में देखूं, करुँ सभी से पावन प्यार।
नाते नेह राम के नाते, भानू ममता मोह विसार।
देखूँ, सुनू, गुनू निज अवगुण औरन के गुण हरष निहार।

।। श्री राम।।

भजन-८

मधुर वचन अति निर्मल जीवन,
सुखद आचरण करुँ सम्भार,
पर सेवा उपकार अहम तजि,
वज्र संकल्प करुँ विचार,
प्रेम प्रवाह में भर दे अपने,
प्रेम दया के प्रभू अगार,
राम सरन पां पकड़ प्रभू पद,
त्राहि–त्राहि मन करे पुकार,
नाम "प्रसाद" से भव सिन्ध सूखे,
सुमिरि सुमिरि सब उतरो पार।

।। श्री राम।।

भजन-९

"करामात किस कलाकार की"

[1]

गगन पे लटके बिना सहारे,
सूर्य चन्द्र शनि धरनि सितारे,
धरती डोले, चले चन्द्रमा,
रितु बदले दिन रात सकारे,
कण कण में नव विकसित जीवन,
पले बढ़े, पुनि हो संघारे,
जड़, वन, पशु, नर योनि सभी को,
गुण अवगुण बहु रूप मिला रे,
लगे न सेना सेवक जन्तर,
ज्ञानी, विज्ञानी महिपाल,
करामात किस कलाकार की,
प्रकृति चले चक चौकस चाल।

[2]

टिम टिम करते लाखों तारें,
गँग अकासी बहे महान,
धरती साजे रुप चान्दनी,
पौरुष फूकें सूर्य जहान,
मन्द समीर बहे मन भावन,
चूँ चूँ चिड़िया गाती गान,
कल कल कलरव करती नदियां,
पुष्पित, फलित, हरित परिधान,
महा काव्य किस आदि कवि का,
विछा आलौकिक उपमा जाल,
कण रज पा के रचे रामायण,
बाल्मीकि तुलसी प्रति काल।

[3]

सुन्दर दुर्लभ देह गढ़ी पर,
शिल्पी औ औजार नही,
रंग अलौकिक खिले फूल पर,
भरे रंग चित्रकार नही,
बरसे रिम झिम मेघा काले,
गगन पे जल भण्डार नहीं,
भोगें सब निज करनी का फल,
न्याय दण्ड सरकार नहीं,
कीट, पतंग, विहंग पशू का,
भरे पेट को, हित प्रतिपाल,
भले, बुरे, जो सब प्राणी से,
करे प्रेम सम, चूमे गाल।

[4]

अगम आगोचर मन बुद्धि पर,
बंधे प्रेम की डोर से,
कोटि ब्रह्म गतिशील करे जो,
देखत ही दृग कोर से,
आदि स्रोत सो प्रभु की सत्ता,
है अनन्त चहुँ ओर से,
निरख छवि प्रभु झूमो नाचो,
हृदय कुंज में मोर से,
धन्य धन्य प्रभु तुम्हरी महिमा,
नमो नमामी चरनन भाल,
पा "प्रसाद" प्रभु परम प्रेम पद,
निमिष में लांघो भव–निधि–नाल।

।। श्री राम।।

(साधना पत्रिका जनवरी–मार्च १९८२ अंक
४–६ पृष्ठ में प्रकाशित)

भजन-१०

"न हो यदि मिलन"

न हो यदि मिलन पा के नर योनि हरि से
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

गर्मी शिशिर जल हिमा जड़ जगत में,
प्रभु योग से योनि लाखों बिताए,
पाषाण पर्वत शिला मार्ग मूरत,
लता बेल तरुवर विटप रुप पाए,
जिये फिर मरे अति कसे पशु जगत में,

निष्प्रयास, प्रभु पग पग बढ़ाएं,
विपुल हरि कृपा कर्म योनि मिली जब,
सभी शक्ति साधन सुबुद्धि समाए,
विषय मोह ममता में मन को रमा के,
चले हो विमुख तब हरी नाम के,

न हो यदि मिलन पा के नर योनि हरि से
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

।। श्री राम।।

भजन-११

"देखो सब में योग सुराम के"

न हो यदि मिलन पा के नरयोनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

गतिमान सतत लीला सुख दुख की,
गुण अवगुण के नित संघर्ष।

जीवन मृत्यु के दुष्कर अभिनय,
हार जीत विप्लव उत्कर्ष।

दलन दमन दुःख युद्ध सन्धि के,
राज महल में रमण केलियाँ।

प्रीति प्रतीत व कल्पित सम्मुख,
झरे खिले फूलों की कलियां।

अनुचित उचित भयंकर कोमल,
देखो सब में योग सुराम के।

न हो यदि मिलन पा के नर योनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

।। श्री राम।।

भजन-१२

''विलय के बिना ना पल चैन आए''

न हो यदि मिलन पा के नरयोनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

लगी लौ पतंगे की दीपक की लौ से,
लपट के समाया परम चेतना में।

पावक शिखा भी लपकती समाने,
सदा सर्वदा रवि के ज्योर्ति घना में।

जले बूँद जल जो सागर बिरह में,
''कल–कल–मिलन'' का सो कलरव मचाए।

तत्व का यो विनिश्चित विलय तत्व में,
विलय के बिना न पल चैन आए।

मृग तृष्णा बने भागते मोह मरु में
यद्यपि पथिक हम परम धाम के

न हो यदि मिलन पा के नर योनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

।। श्री राम।।

भजन-१३

"हँस चलो उड़ धाम राम के"

न हो यदि मिलन पा के नरयोनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

किस के रोके रूका है चेतन,
बहे विकास की अविरल धारा।

शोधित तम रज गुण सब होते,
सत चित ज्ञान का पा उजियारा।

देव दिव्य अति मिले चेतना,
कर पुरुषारथ नाम सहारा।

राम नाम की अलख जगाओ,
तजि कुसंग अज्ञान विकारा।

प्रेम "प्रसाद" के चुगते मोती,
हँस चलो उड़ धाम राम के।

न हो यदि मिलन पा के नर योनि हरि से,
धरनि धाम सुत लोक किस काम के।

।। श्री राम।।

।। श्री राम।।

(साधना पत्रिका अप्रैल—जून १६८१ अंक
४—५ पृष्ठ में प्रकाशित)

भजन-१४

"निज कृत जाल में फंस अब रोता
मूरख मन मत करे गुमान"

नारि, बन्धु, सुत,स्वजन सनेही,
दिवस चार के नाते जान,

बीच में मिल के राह नापते,
पूरा करके कर्म विधान,

सुन्दर काया लखि इतराया,
मल, अवगुण, कफ, पित की खान

चिता चपेटे तड़ तड़ तड़के,
जले हाड़ लै भागे स्वान,

क्षण भंगुर नर योनि यद्यपि है
रहा तान "तू–मैं" की तान,

धन, गृह, नाते, मान, प्रतिष्ठा,
सब प्रभु के मत अपने मान,

काम, क्रोध, मद, मोह भवंर लखि
चूस रहे मधु, तन, मन प्राण

निज कृत जाल में फंस अब रोता,
तुम्ही उबारो हे भगवान,

ज्ञान "प्रसाद" को देने प्रगटे,
त्राहि–त्राहि, गुरू, देव महान।

।। श्री राम।।

भजन-95

"कैसा मूरख सठ अज्ञानी"

मूरख मन मत कर मनमानी,
विषय कुसँग त्याग हरि भजि ले,
दुलर्भ लख जाती जिन्दगानी,
बाल अवस्था खेल गवाँया,
झूम--झूम मद मस्त जवानी,
दया दान उपकार प्रेम तजि,
बना क्रूर लोभी अभिमानी,
चढ़ा बुढ़ापा अंग शिथिल अब,
अन्त हो रही राम कहानी,
तब भी तृष्णा तड़के मन में
सुत धन लोक की हो दीवानी,
बन पशु निज जीवन चर डाला,
कैसा मूरख सठ आज्ञानी,
सुमिरन कर ले राम नाम मन,
कर्म करे प्रभु आज्ञा मानी,
मन उदार, आचरण सुपावन
मन भावनि बोले मृदु बानी,
पुष्पित, फलित सुगन्धित कर दें,
सभी दिशा जानी अनजानी,
ले "प्रसाद" मन मन्थन करके,
मनुष्य योनि की यही निशानी।

।। श्री राम।।

भजन-१६

"भव पार करे सब सुगम सफल दो"

पावन प्रेम का प्रभु जी वर दो।

राम नाम गुण प्रेम भाव से,
ओत प्रोत मन बुद्धि कर दो।
पावन प्रेम ... ...

मन की सूखी सरिता को,
कर राम नाम वृष्टि भर दो।
पावन प्रेम ... ...

राम नाम मन बजे नफ़ीरी,
हरि नाम का गाते गीत भ्रमर दो।
पावन प्रेम ... ...

अज्ञान तिमिर का नाश करें जो,
जप नाम से प्रगटें तेज प्रखर दो।
पावन प्रेम ... ...

सत् चित् ज्ञान का उमड़े सागर,
भव पार करें सब सुगम सफर दो।
पावन प्रेम ... ...

प्रभु "प्रसाद" विश्वास अटल दो,
गुरु चरनो में प्रीति अमर दो।
पावन प्रेम ... ...

।। श्री राम।।

भजन-१०

"नर तन लोक किया साकार"

सतगुरु प्यारे परम उदार,
दीन बन्धु अति करुणा सागर,
करें अकारण कृपा अपार,
अधम, अकिंचन, अज्ञानी मैं,
मन, बुद्धि, तन सने विकार,
भोग भोगते जब थक हारा,
त्राहि–त्राहि मन उठी पुकार,
प्रगट सहारा दिया तुम्ही ने,
आँसू पोछा दिया दुलार,
नहि देखा मैं पापी, कपटी,
अवगुण पर नहिं किया विचार,
पुष्पित हुआ बुझा सूखा मन,
सत्गुरु का पा पावन प्यार,
दिव्य मन्त्र दे राम नाम का,
नर तन लोक किया साकार,
प्रभू चेतना करे विशोधन,
तम हर प्राण में भर उजियार,
जनम जनम का सेवक हूँ गुरु,
दो प्रसाद कर भवनिधि पार।

।। श्री राम।।

भजन-१८

"हाथ खोल जाय शमशान"

दुर्गुण दूर करो भगवान,
मनुष्य शरीर मिला अति दुर्लभ,
व्यर्थ गवाता, सठ, अज्ञान।

विषय वासना रुचिकर लगते,
पकड़ हाड़ ज्यों चूसे स्वान।

अहं, मोह, मद काम, लोभ वश,
पशू बना बिन पूछ विषान।

सुत, धन, यश मद में बौराया,
बना क्रूर, लोभी, शैतान।

जिन प्रभु कृपा जुटा सब संगत,
उन्हें बिसारा बन अनजान।

मुट्ठी बांधे आया जग में,
हाथ खोल जाय शमशान।

कृपा "प्रसाद" से निर्मल कर दो,
दीन बन्धु, हे दया निधान।

।। श्री राम।।

भजन-१९

"रोम रोम तन करे आरती"

[1]

राम नाम की ज्योति जगे जब,
मन मन्दिर में हो उजियार,
रोम रोम तन करे आरती,
राम नाम की हो झंकार,
राम नाम की हो गुंजार।

धन्य तभी यह नश्वर जीवन,
नाते नेह स्वजन परिवार,
धन, दौलत, यश, मान प्रतिष्ठा,
शक्ति साधन सब संसार,
रोम रोम तन करे आरती,
राम नाम की हो झंकार,
राम नाम की हो गुंजार।

[2]

विश्वास, लगन जब निष्ठा सेवा,
राम नाम मन जगे पुकार,
अज्ञान, तिमिर, मम, घटते जाये,
पावन प्रेम का हो संचार।
धन्य तभी साधन पुरुषारथ,
नर तन यद्यपि सने विकार।
तन, मन, बुद्धि प्राण झुके सिर,
प्रभु चरणों में बारम्बार।
रोम रोम तन करे आरती,
राम नाम की हो झंकार,
राम नाम की हो गुंजार।

[3]

"मैं–तू–पन" का मान मिटे जब,
मां गोदी में धर निजि भार,
शीश पे कर रख गाल चूम मां,
करि आलिगंन बांह पसार।

धन्य तभी इस जीव का तीरथ,
मरता जीता जो लख बार,
प्रभु "प्रसाद" से अधम अकिंचन,
निश्चय उतरे भव निधि पार।

रोम रोम तन करे आरती,
राम नाम की हो झंकार,
राम नाम की हो गुंजार।

भजन-२०

"जैसा हूँ, बस तेरा हूँ गुरु स्वीकार करो स्वीकार करो"

[1]

भव भँवर में जीवन नाव फंसी,
मन गहरे पैठ पुकार करो,
मांझी बन पतवार गहो, गुरु
पार करो प्रभु पार करो।।

[2]

विषय वासना विषधर बन बन,
पल पल डसते, तन मन प्राण,
महा मन्त्र दे राम नाम, गुरु,
उपचार करो, उपचार करो।

[3]

नहीं पास है विद्या बुद्धि,
धरम करम नहि भक्ति शक्ति,
जैसा हूँ बस तेरा हूँ, गुरु,
स्वीकार करो, स्वीकार करो।

[4]

सत्यम्, शिवं, सुन्दरम, गुरु जी,
सत चित् ज्ञान के आगर हो, तुम,
प्रेम की ज्योति जगा मन जग मग,
उजियार करो, उजियार करो।

[5]

राम नाम की लय ध्वनि गुँजे,
मन मृदंग के तालों में,
ले "प्रसाद" गुरु माथे टेको,
जयकार करो, जयकार करो।

।। श्री राम।।

भजन-29

"संकल्प तुम्हारा अमर रहेगा"

[1]

सतगुरु के साकार रुप तुम,
दिव्य ज्योति हो, हे निष्काम,
सतगुरु पथ के सजग प्रदर्शक,
श्रीराम शरण तुमको प्रणाम,
हम सब करते तुम्हे प्रणाम,
तुमको बारम्बार प्रणाम।

[2]

पन्थ दिखाया, मति दृढ़ कर दो,
भटक रहे बालक अनजान,
शीष पे कर रख शक्ति दे दो,
हे पथ ज्ञाता, ज्ञान के धाम,
सतगुरु के साकार रूप में तुम
दिव्य ज्योति हो हे निष्काम,
सतगुरु पथ के सजग प्रदर्शक,
श्रीराम शरण तुमको प्रणाम,
हम सब करते तुम्हें प्रणाम,
तुमको बारम्बार प्रणाम।

[3]

ज्योति से ज्योति जगाई जन जन,
मन मन पावन प्रेम प्रसार,
कण कण निखरे रूप गुरु का,
रोम रोम में व्यापे राम।
सतगुरु पथ के सजग प्रदर्शक,
श्री राम शरण तुम को प्रणाम,
हम सब करते तुम्हें प्रणाम,
तुमको बारम्बार प्रणाम।

[4]

तुम्हारे चरणों की धूल हैं हम,
गुरु प्रेम का दो वरदान,
सेवा, प्रेम, लगन जाग्रत हो,
चले सतत् मन राम का नाम,
सतगुरु पथ के सजग प्रदर्शक,
श्री राम शरण तुमको प्रणाम,
हम सब करते तुमको प्रणाम,
तुमको बारम्बार प्रणाम।

[5]

पंच तत्व तन भले विलय हो,
संकल्प तम्हारा अमर रहेगा,
कृपा "प्रसाद" से पुष्पित चेतन,
दिव्य ज्ञान हो चिर विश्राम।
सतगुरु पथ के सजग प्रदर्शक,
श्रीराम शरण तुमको प्रणाम,
हम सब करते तुमको प्रणाम,
तुमको बारम्बार प्रणाम।

।। श्री राम।।

भजन-२२

"किस अन्य को माथ नवाएं हम"

[1]

गुरू शक्ति सहारे सच्चे मन से,
संकल्प यही दोहराएं हम,
सेवा, प्रेम, समर्पण, सुमिरन,
श्रद्धा भक्ति बढ़ायें हम।

[2]

सोते जगते हर काम को करते,
राम नाम मन जाप करे,
कर्म सभी कर प्रभु को अर्पित,
जीवन निष्काम बनायें हम।

[3]

बुद्धि ऐसी करदो गुरूवर,
परदोष न देखूँ मनन करूँ,
प्राणि मात्र से प्रेम करूँ,
सब ही को हृदय लगायें हम।

[4]

निर्मल जीवन हो गंगा जल सम,
मधुमय वाणी मुख से बोलूँ,
ममता, मोह, अहं को तजि कर,
प्रेम की ज्योति जगायें हम।

[5]

ऐसी निष्ठा जाग्रत कर दो,
कर्तव्य कर्म नहि भार लगे,
विपदाओं से डरे नहीं मन,
हरि कृपा समझ हर्षायें हम।

[6]

सब हानि सहूँ अपमान सहूँ,
होने न दूँ घर वैर कलह,
मन उदार कर खुशी को बाँटू,
घर सेवा सदन सजाएं हम।

[7]

आनन्द प्रेम से मन गमके,
जैसे गुलाब का फूल खिले,
गुरु संदेश प्रसारित कर के,
सभी दिशा महकायें हम।

[8]

गीता, वेद, पुराण तुम्ही हो,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश तुम्ही हो,
प्रभु "प्रसाद" पा ब्रह्म सा सतगुरु,
किस अन्य को माथ नवायें हम।

।। श्री राम।।

भजन-२३

[1]

प्रभु बाँह गहो, प्रभु बाँह गहो
हम भटक रहे अनजाने में
नशे में मद के झूम रहे,
बस, दो दिन के मैखाने में,

[2]

उमर गई दर मौत खड़ी,
तृष्णा न गई मन प्राणों से,
मार के कुडंल फन फुफकारें,
सुत, यश, लोक, खज़ाने में।

[3]

रीते हाथ गये लख रावन,
सहसबाहु खर कंस बली,
प्रभु को धूल समझने वाले,
खुद हुये धूल वीराने में।

[4]

सोच समझ अब तो उठ जागें,
जप राम नाम सतकर्म करें,
बन हंस प्रेम के उड़ते जायें,
उतरें प्रभु ठिकाने में।

[5]

अवगुण घटते धीरे–धीरे
इस की हम को परवाह नहीं,
मन "प्रसाद" पुष्पित होगा ही,
प्रभु के प्रेम समानेमें।

।। श्री राम।।

भजन-२४

"मनुष्य जनम का कर कुछ ध्यान"

ऐसी मेरी, बुद्धि भगवान,
जाने खुद को धनवान गुनी पर,
हरी विमुख, मन अवगुण खान ।।१।।

काम को पौरुष, तेज क्रोध को,
लोभ को संचय, तर्क को ज्ञान।।२।।

दीन दुखी पर करे क्रूरता,
दया धरम का करें बखान ।।३।।

अन्धा हो कर करे केलियाँ,
कंचन काया करी मसान ।।४।।

राम नाम गुण गान को तजि के,
गाता निज कीरत के गान ।।५।।

सोच समझ अब तो उठ जग जा,
मनुष्य जनम का कुछ कर ध्यान।।६।।

धन दौलत यश धरा रहे, जब
हाथ खोल जाए शमशान।।७।।

अब विवेक को जाग्रत कर दो,
दे "प्रसाद" प्रभु भक्ति का दान।।८।।

।। श्री राम।।

भजन-२५

"धरनि धन धरा धर चला हो के नंगा"

अन्त में क्षोभ, बहे दृग गंगा,
सुर दुर्लभ नर तन को पा कर,
विकारों के फन्दे फंसा बन पतिंगा।।१।।

दया दान उपकार साधन भजन तज,
दम्भी बना क्रूर कपटी लफंगा।।२।।

अहं, क्रोध, धन, यश को सर्वस समझ कर,
ठगा लोक को ठाठ दिखला के ठिंगा।।३।।

सुता सुत सुनारी से सृष्टि सजा कर,
मदहोश केचुल में जैसे भुजंगा।।४।।

भुलाया प्रभू को कि जिस की कृपा से,
बना सब का मालिक मिला सुख का संगा।।५।।

बेला बिती स्वर्ण श्वासों की जिस क्षण,
धरनि धन धरा धर चला हो के नंगा।।६।।

त्राहि–त्राहि हरि शरण हुआ मन,
चढ़े "प्रसाद" से भक्ति रंगा।।७।।

।। श्री राम।।

भजन-२६

"बीती उमर खोजते तब मिला क्षण,
गहन रात में ही सहेर मिल गई"

[1]

गमक को संजोय कली झूमती थी,
उसी क्षण सहारे खिले फूल होकर,
क्यों सदा ताकती सीप आकाश को,
कि मोती बने बूदँ, निर्मूल हो कर,
वह क्षण एक ही था उगा माँ उदर में,
प्रभू को भी साधा, निपट धूल हो कर,
क्या नहीं सार्थक क्षण वही जिन्दगी का,
जगे प्रेम अनुपम गड़े शूल होकर,
बंजर खिली नाचते, लक्ष्य मिलते,
जटा शिव से बिछुड़ी, लहेर मिल गई,
बीती उमर खोजते तब मिला क्षण ।

[2]

मन शून्यता में उड़ाने लगा कर
रवि, चन्द्र तारों में खोजा गगन में,
तीरथ किये पूज पत्थर को देखा,
रोकर नमन, वैराग के कफ़न में,
रमण केलियों में रमाया ह्वदय को,
छवि, रुपसी, सुर, सुरा अनजुमन में,
सदा दूर लगती रही नाभि खुशबू,
यद्यपि बसी थी खुद ही हिरन में,
मृग तृष्णा हुआ भागता ही रहा कि
जिन्दगी में गरजती कहेर मिल गई,
बीती उमर खोजते तब मिला क्षण।

[3]

अलौकिक तभी क्षण जगा एक ऐसा,
कि मन प्राण के तार बजने लगे,
उगा सूर्य कण में प्रखर तेज लेकर,
कि हिमालय के पत्थर भी गलने लगे,
क्षितिज आ समाया हृदय सीप भीतर,
शिखा दीप अगणित ठुमकने लगे,
बजी बीन बर्बस अमराइयों में,
कि मणि छोड़कर नाग मरने लगे,
पुष्प "प्रसाद" मिला लक्ष्य मिलते,
थकते पथिक को ठहेर मिल गई,
बीती उमर खोजते तब मिला क्षण,
कि गहन रात में ही सहेर मिल गई।

भजन-२०

"दुःख द्वन्द्व का भार बिखर जाये"

ऐसी ज्योति जगा दो प्रभु दो,
मन शुद्ध बुद्ध से भर जाये।।१।।

हो उदय ज्ञान का सूरज ऐसा,
अज्ञान तिमिर उर हर जाये।।२।।

शक्ति अनन्त छिपी जो मुझमें,
पहचान सकूं डर मर जाये।।३।।

सच्चिदानन्द का उमड़े सागर,
दुःख द्वन्द्व का भार बिखर जाये।।४।।

मैं–तू–पन का मान मिटे, विष,
अहं, मोह, का झर जाये।।५।।

चले निरन्तर राम नाम मन,
जनम "प्रसाद" सुधर जाये।।६।।

।। श्री राम।।

भजन-२८

प्रभु की ज्योति समाई मुझमें,
रोम–रोम में रमते राम।
तुझमें मुझमें भेद है इतना,
तुम सूरज तो मैं हूँ घाम।
तुम चन्दा मैं, रूप चाँदनी,
तुम अग्नि, मेरा चिनगी नाम।
तुम हो माता, मैं सुत तेरा,
खेल कूद करता कोहराम।
भाँगू, सरकूँ, बाँह पकड़कर,
भरे गोद चूमे निष्काम।

प्रेम पयोनिधि माँ का हो सुत,
चेतन को क्यों घेरे, काम।
दीन दुःखी हो बना आलसी,
काम क्रोध का हुआ गुलाम।
याद दिला दो उस सत्ता की,
बसी जो मुझमें चिर अविराम।
अब 'प्रसाद विश्राम करो चल',
राम – राम जपते हरि धाम।।

भजन-२९

''दिनांक १५.४.६४ परम पूज्य गुरुदेव के निर्वाण दिवस पर कानुपर सेन्टर की ओर से प्रस्तुत''

श्रद्धान्जलि

[1]

सतुगरु,
श्री स्वामी रामानन्द,
प्रभु पद कमल के तुम मकरन्द,
ज्योर्तिमय,
तेजोमय,
अमृतमय,
ज्यों,
सूर्य, अग्नि और चन्द्र,
सतगुरु श्री स्वामी रामानन्द।

[2]

जिन का,
रोम रोम झंकार करे,
राम नाम गुन्जार भरे,
श्रुति और वेद पुराण झरे।
हो कारक
अवतार लिया,
विस्तार किया,
सरल,
सबल,
अविरल,
अवरोहन,
स्थिर और विशुद्ध,
समर्पण
आपा अपना होवे अर्पण

बनता जाये मन हरि दर्पण,
ऐसे हैं,
हमारे, हम सब के
चिदानन्द, आनन्दकन्द,
सतगुरु श्री स्वामी रामानन्द

[3]

सन्तप्त जनों में,
दुखी मनो में,
दुर्गुणों से सनों में,
तम के घनों में,
जगाया नाम,
राम, राम,
जगाई,
तड़प, लगन और
भक्ति निष्काम
निश्चित
दिव्यत्व, चिर विश्राम।
विश्वास हुआ,
एहसास हुआ
छूटेंगे
अवश्य टूटेंगे
मोह और छोह
तृष्णा और वासना
के भवफन्द
ऐसे हैं, हमारे,
हम सब के,
आनन्दकन्द,
सतगुरु श्री स्वामी रामानन्द।

[4]

हे दीनबन्धू,
करुणासिन्धू,
हे गुरुवर,
अंगीकार करो,
स्वीकार करो,
पुष्पों की अंजलि,
बहते दृग जल,
हे ब्रह्मलीन,
हे ब्रह्मानन्द,
सतगुरु श्री स्वामी रामानन्द।

भजन-30

"हर मुश्किल में राह मिली, भगवान तुम्हारी चरणों में,
हर राहों में मिली मुश्किलें, ममता मोह के सपनों में"

[1]

संसार सुखों से सजा के सृष्टि,
परिहास प्रभू का कर डाला,
हिला दी धरती, पग धौंसो से,
हो पागल गज, मतवाला,
काम में रम के राम को तज के,
कौड़ी जोड़ी, खो मणि माला,
आँख खुली जब, चोट पड़ी,
प्राण फड़क रहे नथुनों में,
हर मुश्किल में राह मिली,
भगवान तुम्हारे चरणों में,
हर राहों में मिली मुश्किलें,
ममता मोह के सपनों में।

[2]

मन अन्तर आवाज उठी एक,
नहीं देह, तुम चेतन हो,
कण कण में है बास तुम्हारा
नित्य, निरन्तर, नूतन हो
पुत्र प्रभू का होकर के भी,
फँसे मोह के बन्धन हो,
जगी पुकार प्रभू कृपा से मन जब,
सिसके, सिर घर घुटनों में,
हर मुश्किल में राह मिली,
भगवान तुम्हारे चरणों में,
हर राहों में मिली मुश्किलें,
ममता मोह के सपनों में।

[3]

नित्य नियम, तप, तीरथ व्रत से,
विषय हनन, हरि ध्यान लगाया,
संघर्ष पतन, भय भार वासना,
ने, दुर्गति दण्ड का साया,
भगवान भविष्यत् भय समाज ने,
जीवन को शमशान बनाया,
रहे नापते करम – धरम को,
पाप–पुण्य के नपनों में,
हर मुश्किल में राह मिलीं,
भगवान तुम्हारे चरणों में,
हर राहों में मिली मुश्किलें,
ममता मोह के सपनों में।

[4]

मिली ठहर, नव विकसित जीवन,
पाई सतगुरु की शरणायी,
उपजी भक्ति अनन्य, समर्पण,
राम नाम की लय लहरायी,
तम रज रस तब हुये राम रस,
चेतन मन ने ली अंगड़ायी,
अब "प्रसाद" जपि मंत्र, नहाओ,
राम नाम के झरनों में,
हर मुश्किल में राह मिली,
भगवान तम्हारे चरणों में,
हर राहों में मिली मुश्किलें,
ममता मोह के सपनों में।

भजन-39

"मोह की तान चादर, यों सोते रहे
कि भोग होता रहा, जीव रोता रहा"

[1]

योनि जड़, तन, पशु से उबारा है जिसने
दिया तन मानुष का, कि हो योग उससे।।१।।
संसार सुख साध्य–साधन समझ से
भुलाया प्रभू को, भरा मान मद से।।२।।
मद्–मान मोहित हुआ व्याल करियल,
फन खोल झूमे जो मउहर की धुन पर।।३।।
ये मेरा, ये तेरा, की लय बिन रुके,
राग बजता रहा, नाग डसता रहा।।४।।

मोह की तान चादर, यों सोते रहे,
भोग होता रहा, जीव रोता रहा।

[2]

जो आये थे करने, वही न किया,
सामां जुटाता रहा ठाठ का।।१।।
आसमां फट पड़ा, जब पड़ी ठोकरें,
अहम् मोह बिखरा हृदय–पाठ का।।२।।
धोबी के कुत्ते सी दुर्गति हुई,
न घर का हुआ, न किसी घाट का।।३।।
कफ़न बाँध सिर, तब पुकारा प्रभू को,
होश आता रहा, जोश जाता रहा।।४।।

मोह की तान चादर, यों सोते रहे,
भोग होता रहा, जीव रोता रहा।

[3]

गुरु ब्रह्म ज्योति ने दर्शन दिये तब,
मिला जन्म नूतन, अनोखा, अनूपम।।१।।
न देखा तनिक भी मेरे पाप अध को,
हृदय से लगाया, हुआ शक्ति पातम्।।२।।
कर शीश रखकर, दिया मन्त्र रामम्,
चिदानन्द, सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम्।।३।।
ज़िन्दगी पथ, करम जब हुए हरि सुसाधन,
नाम जगता रहा, काम मरता रहा।।४।।

मोह की तान चादर, यों सोते रहे,
भोग होता रहा, जीव रोता रहा।

[4]

नमामी गुरुजी शिवम्, विष्णु, ब्रह्मम्
नाम रामम् नमामी, महाशक्ति रुपम्,
जगे ज्योति अणु–कण, करे शुद्ध दिव्यम्।।१।।
नर तन नमामी, जपे राम नामम्,
बना हेतु कर्मम्, ब्रह्मम् समागम्।।२।।
दुख–भोग जब से हुये प्रभु "प्रसादम्"
मोह जाता रहा, जीव गाता रहा।।३।।

मोह की तान चादर, यों सोते रहे,
भोग होता रहा, जीव रोता रहा।

।। श्री राम।।

भजन-३२

"काहे रे मनवा रहे उदास"

[1]

कीट मनोरथ पंख लगा के,
चाहत लाघन सात आकाश,
सुत सम्पत्ती समझ बपौती,
जदपि न तेरा तन, तृण, घास,
एही से मनवा रहे उदास।।

[2]

कर्म कुकर्म का भेद ताख धर,
गीध हो, जग का नोचे मांस,
प्रभु को भूला, मद में झूला,
काल फन्द का कर एहसास,
एही से मनवा रहे उदास।।

[3]

आत्म रूप है प्रभु का अंशज,
अणु कण में तेरा ही विलास,
क्यों भरमाया, मन माया में,
प्रभु सत्ता पर नहिं विश्वास,
एही से मनवा रहे उदास।।

[4]

कृपा गुरु जप राम नाम से,
उदित ज्ञान, मन, जगा प्रकाश,
श्रद्धा, प्रेम, लगन का वर दो,
है "प्रसाद" तब पद रज दास,
काहे रे मनवा रहे उदास।।

।। श्री राम।।

भजन-33

तेरे इश्क़ में यूँ मिटा दूँ हस्ती,
कि खुदी का ज़रा न ख्याल हो।
मेरे चश्म में हो नूर तेरा,
मेरी जुस्तजू लामिसाल हो।।

हर शह में हर बशर में,
सागर, ज़मीं शजर में,
तेरा ताब ही नुमाया,
पा उम्र फिर जवाल हो।।

तेरे नूर से हर रेशे–जर्रा,
मुसाफ़िरत कर बदले सीरत,
तू ही रवाँ हर शक्ल में,
जैसे बुना एक जाल हो।।

तेरे हुनर से घूमें धरती,
देकर ग़िज़ा अज़ हीरे मोती,
दिन रात बदले, बदले मौसम,
मरहबा क्या कमाल हो।।

मेरा इस्म तेरा जिस्म तेरा,
मेरा कर्म तेरा, धर्म तेरा,
मैं हूँ क़तरा तू है सागर,
मिटे बिना न विसाल हो।।

मेरे सुरुरे दर्दे ग़म,
तोहफा मिले रब की करम,
सजदा कराया नूरे जलवा
ग़म में तेरा ही जमाल हो।।

तेरी रज़ा इरशाद हो,
मक़बूल दिल–ए–"प्रसाद" हो,
तेरी ख़ुदाई के सामने,
शिकवा न कोई सवाल हो।।

तेरे इश्क़ में ... ...

भजन-३४

दोहे

सेवा साधन वृक्ष है, फल है प्रेम 'प्रसाद'।
मन्त्र राम का बीज है, मेटे विषय विषाद।।१।।

मन्त्र राम जप सरल है, श्रम लागेहि नहि दाम।
सहज शान्ति और सौम्यता, दे 'प्रसाद' निष्काम।।२।।

नाम जपन प्रभु प्रेम है, भक्ति सर्मपण खान।
महाशक्ति अविरल बहे, है 'प्रसाद' सत ज्ञान।।३।।

रोगी दीनन दुखिन को, दीजै प्रेम 'प्रसाद'।
बल आतम विकसित करे, मन को हरे विषाद।।४।।

प्रभु शरण हो जाये मन, अहंकार मिट जाये।
तम, रज रस हो रामरस, मन 'प्रसाद' बन जाये।।५।।

मन ऐसा है बावरा, माया पकड़न धाय।
ज्यों 'प्रसाद' मृग रेत में, जल खोजत मर जाये।।६।।

कब 'प्रसाद' जप तप कियो, जब थे पशु पाषाण,
जिनकी कृपा से नर बने, वे ही है भगवान।।७।।

नर तन दुर्लभ हरि कृपा, अमर आत्मा ज्ञान।
पर 'प्रसाद' तू तो बना, कामी पशु हैवान।।८।।

कोयल घोले प्रेम रस, कागा सुनि मन रोष।
मधुमय वाणी राम रस, हरे प्रसाद के दोष।।६।।

मधुर वचन है राम रस, तीखे मन में काम।
मीठे बोल 'प्रसाद' सुनु, श्रम लागे नहि दाम।।१०।।

अहंकार दीवार है, जीव हरी के बीच।
अपार कृपा गृरु ते करे, जो 'प्रसाद' अति नीच।।११।।

सभी पढ़े दुख पाठ है, साधु, शासक, चोर।
'प्रसाद' दुख मन बल, उदय ज्ञान का भोर।।१२।।

आग जलावे शवों को, पर है एक अपवाद।
चिन्ता चित्त के क्षोभ में, जीवित जले 'प्रसाद'।।१३।।

चिन्ता सापिन यों डसे, पल–पल मरे शरीर।
भावी जनमें विष भरे, बहि 'प्रसाद' दृग नीर।।१४।।

दुखियन के मन दर्द में, सहज बसे भगवान।
सेवा उनकी कीजिए, तजि 'प्रसाद' अभिमान।।१५।।

हरी कृपा प्रतिकूल में, जगे आत्म विश्वास।
समता सेवा प्रेम बढ़ि, दया 'प्रसाद' विकास।।१६।।

प्रभु चरनों में प्रीती जो, गुरु वचन विश्वास।
सहज जीव 'प्रसाद' का, द्रुति गति होय विकास।।१७।।

व्यर्थ, अनर्थ की बात में, खोय शक्ति महान।
दोष दूसरे का लखे, सो 'प्रसाद' पशु जान।।१८।।

लय, पालन व सृजन है, हरि की कृपा महान।
स्वीकार सहज जो करे, भगत 'प्रसाद' सत्–ज्ञान।।१९।।

धन का संचय हो सके, प्रेम 'प्रसाद' का नाहि।
सम वृत्ति से सुख मिले, घटे न चोर चुराहि।।२०।।

तन धन सुत तेरा प्रभु, पर 'प्रसाद' कहि मोर।
तिन का संग न जाये, पर स्वामी माने चोर।।२१।।

।। श्री राम।।

भजन-३५

"नववर्ष का सन्देश"

लय हो गया है वर्ष पुराना,
नया दूसरा दे उपहार।
बीत गया भी मंगलमय था,
नये से भी आतम हो उजियार।
हरि कृपा समझ कर माथ, नवाएं,
कष्टों की जब हो बौछार।
कर्म करें सब प्रभु को अर्पित,
जप कर राम नाम लख बार।
हो "प्रसाद" मय जीवन जग का,
बरसे प्रभु की कृपा अपार।
लय हो गया है... ... ...

।। श्री राम।।

भजन-३६

कृपा प्रभू का वाहन बनकर,
वर्ष नया हो अतिशुभकर।
सुखी सभी प्राणी हो जग में,
पावन प्रेम का हो संचार।
भेदभाव मन अहं मिटे सब,
पाप रहित हो जन संसार।
कर्म हमारे हो प्रभु को अर्पित,
राम नाम की हो गुंजार।
गुरु चरनों में शीश नवाएं,
हो "प्रसाद" सब का उद्धार।

।। श्री राम।।

भजन-30

श्रद्धांजलि

[1]

मातु, पिता, हे बन्धु, सखा, गुरु,
स्वीकार करो श्रद्धा, अंजलि।
हो कारक तुम युग के स्वामी,
अवतार लिया, उद्धार किया।
फंसे थे जो हम घोर तिमिर में,
सूरज बन उजियार किया।
कण–कण में जो राम रमा है,
दरस करा भव पार किया।
सहज सरल साधन पथ देकर,
राम मंत्र अरु दी मंजिल।
मातु, पिता, हे बन्धु, सखा, गुरु,
स्वीकार करो श्रद्धा, अंजलि।

[2]

भोग को तुमने योग बनाया,
सेवा को जप नाम बताया।
काम कोध का हो परिशोधन,
जीवन जीना कला बनाया।
टेको माथा सभी दशा में,
समर्पण का सार सिखाया।
अनुपम संगम ईश प्रकृति दे,
कर्म योग हरी कृपा का सम्बल।
मातु, पिता, हे बन्धु, सखा, गुरु,
स्वीकार करो श्रद्धा, अंजलि।

[3]

है "प्रसाद" की विनती गुरुवर,
सेवा तेरी करुं निरन्तर।
तेरे पग की नख ज्योति से,
परम प्रकाश जगे उर अन्तर।
सुखी सभी प्राणी हो जग में,
पाप रहित धरती हो अम्बर।
राम नाम से ओत प्रोत हों,
परम गति पावें हम अविचल।
मातु, पिता, हे बन्धु, सखा, गुरु,
स्वीकार करो श्रद्धा, अंजलि।

।। श्री राम।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानाम्, प्राणिनामार्तिनाशनम्।।